



## रामकृष्ण मशिन के 'जागृति' कार्यक्रम

### प्रलिस के ललतः

रामकृष्ण मशिन का 'जागृति' कार्यक्रम, केंद्रीय माध्यमक शकषा बर्ड (सीबीएसई), स्वामी ववकानंद ।

### मेन्स के ललतः

स्वामी ववकानंद की शकषाओं का महत्त्व ।

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्रीय शकषा मंत्री ने स्कूली छात्रों के ललतः रामकृष्ण मशिन के 'जागृति' कार्यक्रम की शुरुआत की ।

## 'जागृति' कार्यक्रमः

### परचलतः

- यह राष्ट्रीय शकषा नीतल (National Education Policy-NEP), 2020 के अनुरूप एक बच्चे के समग्र वलकृत्व वकलस को सुनशलतल करने की दशल में एक पहल है ।
- यह पहली से पाँचवीं ककषा तक के छात्रों के ललतः है ।

### पृष्ठभूमलः

- रामकृष्ण मशिन, दललली शाखा, वर्ष 2014 से माध्यमक वदलयालय के छात्रों को "आत्मशरद्धा" (आत्म-सम्मान) नरलमाण और वकल्लपों के चयन में सकषम बनाने के ललतः जागृत नागरकल कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन कर रहा है । यह उन्हें जीवन की सभी समस्याओं का समाधान खोजने में मदद करता है ।
- शकषावर्दों की ओर से प्राथमक वदलयालय के छात्रों के ललतः इसी तरह के कार्यक्रम की मांग की गई है ।
  - इसके जवाब में 'जागृति' को 126 स्कूलों के ललतः डलललन और संचालतल कलतल गया है ।

### केंद्र बद्धलः

- सामाजकल परवलरतन शकषा के प्रमुख लकष्यों में से एक है ।
- मूलतः और ज्ञान भौतकल सुखों से अधकल महत्त्वपूरण है ।
- भवषलतः के ललतः तैयार और सामाजकल रूप से जागरूक पीढ़ी के नरलमाण के ललतः मूलतः आधारतल शकषा आवश्यक है ।

## रामकृष्ण मशिनः

### परचलतः

- रामकृष्ण मशिन वलयापक शैकषकल और परोपकारी कार्य करता है तथा भारतीय दर्शन के एक स्कूल अद्वैत वेदांत के आधुनकल संस्करण की वलयाख्या करता है ।
- मशिन की स्थापना वर्ष 1897 में ववकानंद द्वारा कोलकाता के पास संत रामकृष्ण (वर्ष 1836-86) के जीवन में सन्नहलतल वेदांत की शकषाओं का प्रसार करना और भारतीय लोगों की सामाजकल स्थलतलतलतल में सुधार करने के दोहरे उददेश्य के साथ की गई थी ।
- संगठनों को 19वीं सदी के बंगाल के महान संत श्री रामकृष्ण (1836-1886) जलनहें आधुनकल युग का पैगंबर माना जाता है तथा उनके प्रमुख शषलतः स्वामी ववकानंद (1863-1902) द्वारा अस्तलतलतलतल में लाया गया था ।

- आदर्श वाक्यः "आत्मानो मोकषार्थं जगद हतलतः च" ("अपने स्वयं के उदधार और दुनतलतः के कलयाण के ललतः") ।

## स्वामी ववकानंदः

### जन्मः

- स्वामी वविकानंद का जन्म **12 जनवरी, 1863 को हुआ** तथा उनके बचपन का नाम नरेंद्र नाथ दत्त था ।
- प्रत्येक वर्ष स्वामी वविकानंद की जयंती (12 जनवरी) को **राष्ट्रीय युवा दविस** के रूप में मनाई जाती है ।
- वर्ष 1893 में खेतड़ी राज्य के महाराजा अजीत सहि के अनुरोध पर उन्होंने 'वविकानंद' नाम अपनाया ।

#### ■ योगदान:

- उन्होंने वशि्व को **वेदांत और योग** के भारतीय दर्शन से परिचित कराया ।
  - उन्होंने 'नव-वेदांत' का प्रचार किया, एक पश्चिमी धारा के माध्यम से हद्वि धर्म की व्याख्या और भौतिक प्रगतिके साथ आध्यात्मिकता के संयोजन में विश्वास किया ।
- वविकानंद ने मातृभूमिके उत्थान के लिये शिक्षा पर सबसे अधिक बल दिया । मानव हेतु चरतिर-नरिमाण की शिक्षा की वकालत की ।
- उन्हें वर्ष 1893 में शकिगो में वशि्व धर्म संसद में दिये गए उनके भाषण के लिये जाना जाता है ।
- सांसारिक सुख और मोह से मोक्ष प्राप्त करने के चार मार्गों का वर्णन उन्होंने अपनी पुस्तकों (राजयोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तयोग) में किया है ।
- **नेताजी सुभाष चंद्र बोस** ने वविकानंद को "आधुनिक भारत का नरिमाता" कहा था ।

#### ■ संबंधित संगठन:

- वह **19वीं सदी के रहस्यवादी रामकृष्ण परमहंस** के मुख्य शिष्य थे और उन्होंने वर्ष 1897 में **रामकृष्ण मशिन** की स्थापना की ।
  - रामकृष्ण मशिन एक ऐसा संगठन है जो मूल्य आधारित शिक्षा, संस्कृति, स्वास्थ्य, महिला सशक्तीकरण, युवा एवं आदवासी कल्याण एवं राहत तथा पुनर्वास के क्षेत्र में काम करता है ।
- वर्ष 1899 में उन्होंने **बेलूर मठ की स्थापना** की, जो उनका स्थायी निवास बन गया ।

#### ■ राष्ट्रवाद:

- हालाँकि राष्ट्रवाद के विकास का श्रेय पश्चिमी प्रभाव को जाता है लेकिन स्वामी वविकानंद का राष्ट्रवाद भारतीय आध्यात्मिकता और नैतिकता में गहराई से निहित है ।
- उनका राष्ट्रवाद मानवतावाद और सार्वभौमिकता पर आधारित है, जो भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं ।
- पश्चिमी राष्ट्रवाद के विपरीत जो प्रकृति में धर्मनिरपेक्ष है, स्वामी वविकानंद का राष्ट्रवाद धर्म पर आधारित है जो भारतीय लोगों का जीवन रक्त है ।
- **उनके राष्ट्रवाद के आधार हैं:**
  - जनता, स्वतंत्रता और समानता के लिये गहरी चिंता व्यक्त की और सार्वभौमिक भाईचारे के आधार पर दुनिया के आध्यात्मिक एकीकरण पर बल दिया ।
  - "कर्मयोग" नःस्वार्थ सेवा के माध्यम से राजनीतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये नैतिकता की एक प्रणाली है ।
- उनके लेखन और भाषणों ने मातृभूमिको देशवासियों द्वारा मन और दिल से पूजे जाने वाले एकमात्र देवता के रूप में स्थापित किया ।

#### ■ मृत्यु:

- वर्ष 1902 में बेलूर मठ में उनकी मृत्यु हो गई । पश्चिम बंगाल में स्थित बेलूर मठ, रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मशिन का मुख्यालय है ।

**स्रोत: पी.आई.बी.**